



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

हृषिकानामप्यसा। कर्तृधनानामप्यनशा। अमृकप्रिदनामप्यनशा। यनिर्त्तानिर्त्तिकायातामप्यन
 शा। मणियरुतानामप्यनशा। चूकानामप्यनशा। देवार्त्तानामप्यनशा। यक्कृत्तानामप्यनशा।
 प्यनशा। नैकनामप्यनशा। कावेत्तानामप्यनशा। नीनात्यलानामप्यनशा। प्रमोहिन्या
 नामप्यनशा। सुकीर्णनामप्यनशा। चूकानामप्यनशा। कर्त्तृकानामप्यनशा। सुकृत्तानाम
 प्यनशा। केयूरनामप्यनशा। दाननामप्यनशा। नानामप्यनशा। वीषभखातिपति

कृत्तानामप्यनशा। अमृकप्रिदनामप्यनशा। यनिर्त्तानिर्त्तिकायातामप्यन
 शा। मणियरुतानामप्यनशा। चूकानामप्यनशा। देवार्त्तानामप्यनशा। यक्कृत्तानामप्यनशा।
 प्यनशा। नैकनामप्यनशा। कावेत्तानामप्यनशा। नीनात्यलानामप्यनशा। प्रमोहिन्या
 नामप्यनशा। सुकीर्णनामप्यनशा। चूकानामप्यनशा। कर्त्तृकानामप्यनशा। सुकृत्तानाम
 प्यनशा। केयूरनामप्यनशा। दाननामप्यनशा। नानामप्यनशा। वीषभखातिपति

नक्षिणीताम किन्नरकन्या। नृपुत्राहमाताम किन्नरकन्या। कलारुपताम किन्नरकन्या। हारुहय
ग्रहधर्मकाङ्क्षिणीताम किन्नरकन्या। दानकालदर्शीताम किन्नरकन्या। शुभसितीताम किन्नरकन्या
विभाङ्ककन्याताम किन्नरकन्या। हारा नृपुत्राहमाताम किन्नरकन्या। गङ्गाविनीताम किन्नरकन्या।
कलताम किन्नरकन्या। पृथिवीउयसकाम ताताम किन्नरकन्या।
ताताम किन्नरकन्या। मणिपुत्रताम किन्नरकन्या।

मकिन्नरकन्या। वज्रानाम किन्नरकन्या। वक्राध्यानाम किन्नरकन्या। शतायुधताम किन्नरकन्या।
विहयितालकानाम किन्नरकन्या। मनाह्वीताम किन्नरकन्या। वक्रपुत्रताम किन्नरकन्या।
न्याशतानि सन्निपतिता निवसन्तानि उपासकाया सिकाशतानि सन्निपतिता निवसन्तानि
विषाङ्कनिर्यन्तुशतानि सन्निपतिता निवसन्तानि सन्निपतिता निवसन्तानि
गयानि सन्निपतिता निवसन्तानि सन्निपतिता निवसन्तानि

[illegible]

नि।मो।लि।कू।ल।य।ग।स।क।य।न।भ।क।य।ल।व।न।
 स्मि।य।ल।म्बि।ता।ति।हा।द।भ।ति।क।ल।य।वृ।ह।भ।ता।नि।पा।द।रू।ता।त।।
 शा।पा।ना।नि।सू।द।भ।क।स्त।।दा।दा।ने।का।पू।म्।का।य।द।क।ला।य।पु।ल।म्बि।ता।ति।भू।त।का।नि।यू।कि।र्जी।जी।म।
 ति।पा।द।रू।ता।ति।।क।नि।द।क्ष।ज्ञ।य।रु।त।वा।नि।भ।प।नि।यू।रू।ति।।क।वि।ला।ता।वि।ध।यू।य।प।नि।यू।रू।ति।।त।य।

लिनामक कालीरुक्मि विरुद्ध न कं का न उ व स न द ध्वन म्मा क सि न व म हान न क अ क न द र्मा क म्ही मि
 क क सि न व क म्ही अ न का नि स ल कोठी नि य न क र स ह्मा मि य कि फा नि य अ व र द का र्मा ह्मा
 म ज्ञा वा मा या वा उ र्ध्व ग क ४ किं र्ग य न क सि य क य वा क र्ध्व ग क ४ ॥ व र स स ह्मा अ वी नो म ह्मा ११
 न न क का यि कं द ४ र्ग य न र ह्मा ॥ क र्ग र ग न वी नो म हान न क र्ध्व ला कि र्ग अ न वा वि स ल्वा
 न स ल्वा ४ य वि धा कि ॥ र्ग न वा नो म ह्मा य अ क ल य न वा न क र्ध्व वि दि य स वि न न म र्ग उ अ न य वि धा

नो व म व क ल य न वा न क र्ग र ग न वी नो म हान न क र्ध्व ला कि र्ग अ न वा वि स ल्वा
 अ र्ध्व अ र्ध्व क र्ध्व वि दि य स वि न न म र्ग उ अ न य वि धा
 ४ धी का र्ध्व म य क ॥ क द र्ग य म य ल क ४ य न वा ४ र्ग व ग मा य क ॥ कि म वी नो म हान न क ४ ४
 र्ग नि मि र्ग य द र्ग र्ग ॥ य द र्ग ला कि र्ग अ न वा वि स ल्वा म हान न ल्वा ४ य वि धा कि ॥ क द र्ग अ क र्ध्व क य
 मा ना नि य ना नि य द र्ग ना नि ॥ मा न क म्ही वि र्ध्व वि ना क सि न मि र्ध्व द र्ग य कि वि धी य द र्ग ना ॥

[illegible][illegible]

गङ्गा किं भूतला किं नृध्वना वाधिसत्त्वमहासत्त्वः ॥ रुग्णता तादृश ॥ तस्य कलपयता वना किं नृध्वना वा
धिसत्त्वमहासत्त्वमूवी नो महातन का निष्कृम्य पुनतगर्भय विष्टः ॥ अत का तिष्ठतः सैनेहना लिः
यन साक्षात् किं दग्धस्फुना क किं रिः ॥ अक्षियुव इष्टि नृध्व कः ॥ नामय दन्ते ॥ यर्ध माद न स निरे ॥ १०
सूजी रिः ॥ यम सत्त्वः ॥ यदा भूतला किं नृध्वना वाधिसत्त्वमहासत्त्वः ॥ पुनतगर्भय सत्त्वः ॥ म किं ॥ न
दा स पुनतगर्भः ॥ श्री लो व स नृग किं ॥ सा नृव का ॥ निष्कृम्य स निता ॥ सा नृ दान या लय नृम उर्ध्व

[illegible]

किं सुखानामवाधिसत्त्वमस्मात्तत्त्वनाशप्रथमार्थवत्ताकिं सुखानामवाधिसत्त्वमस्मात्तत्त्वनाशप्रथमार्थवत्ता
 ७१ अथि त्वाप्त्याविमक्ताश्चान्तमत्वावाधिसत्त्वमोउपयन्तान्दत्तामदाकफयकनगनात्पूतनयिनिकामकि
 ७२ ॥ अथ सर्वनिवनवाविष्कम्हीरुगवकमकदवावकृत्वाहयतामकमि॥ अत्रलाकिं सुखानामवाधिसत्त्वमस्मात्तत्त्वनाश
 लभारुगवाताह॥ अतकातिकृत्वाहयतामकमि॥ अत्रलाकिं सुखानामवाधिसत्त्वमस्मात्तत्त्वनाश
 गत्यनियानयतिवातामिकमप्युक्ताह॥ किं सुखानामवाधिसत्त्वमस्मात्तत्त्वनाश

मत्तामत्त्वस्यामदाकमृत्वाहयतामकमि॥ अत्रलाकिं सुखानामवाधिसत्त्वमस्मात्तत्त्वनाश
 अगनाहं सम्यक्कम्बुद्धालोकउदकाहयतामकमि॥ अत्रलाकिं सुखानामवाधिसत्त्वमस्मात्तत्त्वनाश
 ४४ मत्तामत्त्वस्यामदाकमृत्वाहयतामकमि॥ अत्रलाकिं सुखानामवाधिसत्त्वमस्मात्तत्त्वनाश
 मत्तामत्त्वस्यामदाकमृत्वाहयतामकमि॥ अत्रलाकिं सुखानामवाधिसत्त्वमस्मात्तत्त्वनाश
 मत्तामत्त्वस्यामदाकमृत्वाहयतामकमि॥ अत्रलाकिं सुखानामवाधिसत्त्वमस्मात्तत्त्वनाश

। कीटभी लया रंगवत् ७३ ॥ स्त्रावता भूवला किं न भवत्य वाधिस लस्य महासत्त्वस्य ७४ ॥ रंगवान्

७५ ॥ सत्रकथमगमवमाह ॥ यद्वा भूयावला किं न भवत्य वाधिस लस्य महासत्त्वस्य ७६ ॥ त्रकला मयदा

७७ ॥ दिव्योत्पलाललावलाह ७८ ॥ भवक्षस्त्राया भूवला ॥ यत्तात्राय ७९ ॥ द्वाया भूमनस्वती ॥ मुखमावाय १०

वाक्तायादायाधनभी कथमवत् ८० ॥ यदा ८१ ॥ यत्तात्राय ८२ ॥ किं न भवत्य वाधिस लस्य महा

सत्त्वस्य सकास ८३ ॥ यत्तात्राय ८४ ॥ यत्तात्राय ८५ ॥ यत्तात्राय ८६ ॥ यत्तात्राय ८७ ॥ यत्तात्राय ८८ ॥ यत्तात्राय ८९ ॥ यत्तात्राय ९० ॥ यत्तात्राय ९१ ॥ यत्तात्राय ९२ ॥ यत्तात्राय ९३ ॥ यत्तात्राय ९४ ॥ यत्तात्राय ९५ ॥ यत्तात्राय ९६ ॥ यत्तात्राय ९७ ॥ यत्तात्राय ९८ ॥ यत्तात्राय ९९ ॥ यत्तात्राय १०० ॥

कमलसत्त्वस्य १०१ ॥ यत्तात्राय १०२ ॥ यत्तात्राय १०३ ॥ यत्तात्राय १०४ ॥ यत्तात्राय १०५ ॥ यत्तात्राय १०६ ॥ यत्तात्राय १०७ ॥ यत्तात्राय १०८ ॥ यत्तात्राय १०९ ॥ यत्तात्राय ११० ॥

संस्तानं करुणं गतं लावाधिसार्धमविवर्द्ध ॥ सत्त्वस्य किं विषयि ॥ ७७ ॥ दृष्टं यत् २
७८ ॥ नयसत्त्वस्य सार्धं कर्तुं किं ॥ अकाशालिङ्गमित्वा द्रव्यविधीनस्य यीठिका ॥ अल
यंसर्वरुगानां लीलयन्मस्त्रिङ्गमय ॥ ७९ ॥ दृष्टं मया क्लृप्तं विषयि ॥ न सत्त्वस्य
सत्ता ८० ॥ कदय्य किं कस्य ॥ शिखीनाम गतमगमो र्द्वैतस्य क्लृप्ता विद्या न ८
सम्यन ८१ ॥ गगनालाक विद नूतन ८२ ॥ यत्तात्राय ८३ ॥ यत्तात्राय ८४ ॥ यत्तात्राय ८५ ॥ यत्तात्राय ८६ ॥ यत्तात्राय ८७ ॥ यत्तात्राय ८८ ॥ यत्तात्राय ८९ ॥ यत्तात्राय ९० ॥ यत्तात्राय ९१ ॥ यत्तात्राय ९२ ॥ यत्तात्राय ९३ ॥ यत्तात्राय ९४ ॥ यत्तात्राय ९५ ॥ यत्तात्राय ९६ ॥ यत्तात्राय ९७ ॥ यत्तात्राय ९८ ॥ यत्तात्राय ९९ ॥ यत्तात्राय १०० ॥

रुगवान्। नैनकात्तनकनसमयनाहंसर्वतीवप्रधाविष्कम्हीदानधूआनामवाधिसत्त्वाः। एवं
। नसेवाधि। खिनस्तथागतासकाभादवला। किंरुध्वचस्यवाधिसत्त्वस्यमहासत्त्वस्य३।
१६। हावनाधूना। अथसर्वानिवप्रधाविष्कम्हीरुगवत्कमेकदवाचन॥ कीदृशीरुगव
नस्यया३। १६। हावकवला। किंरुध्वच॥ वाधिसत्त्वस्यमहासत्त्वस्यधेना॥ रुगवत्कमेकदवाचन॥
सर्वदेवानागमयमानादगाः। १७। नैनकात्तनकनसमयनाहंसर्वतीवप्रधाविष्कम्हीरुगवत्कमेकदवाचन॥

सानियार्गदृष्टाकदासात्यामपर्यदाचर्मसाकथकउमानवृशायनः३यनः३कउमानवृशायनः३यनः३कउमानवृशायनः३यनः३
वकासवद्वानानावधुचर्मथानिध्वचकिंसा॥ राधधमा॥ नीलयीगला। किंरावदाकमाकिंरुध्वच
कनऊरुसवधुवधुनानाविध्वचमथानिध्वचकिं॥ निध्वचिह्वायधादिगिदिद्वसुर्वालाकधु
सवसास्या॥ पूनवदागस्यरुगवत्कं३यदकिंकीकथ्यरुगवत्कामसवधुवधुविह्वा॥ अथकस्मि
नवयधुविह्वा। धेनामवाधिसत्त्वाःमहासत्त्व३३रुआसंतादकासिमरुजासमंरुत्वादिदिर्जान्

मल्लं यथिय्यासु निष्ठा यथन हगवान् सुनां जं हं लिं युनस्य हगवन्कमरुद वाच न् ॥ किं काच धीरु
 मं हगवन्ती दृष्टान्ति निरुदं मिर्ग ॥ हगवान्ता ह ॥ एष कल्पप्राद ला किं रुधवा वा धिसु खोमहासु ख
 सुखावती लोक धामा वा गच्छ गिवागस्या गच्छमानस्य वी दृष्टान्ति निरुदं मिर्ग यदा ला किं रुधवा वा २०
 धिसु खोमहासु ख आगच्छ गिवागस्या गच्छमानस्य वी दृष्टान्ति निरुदं मिर्ग यदा ला किं रुधवा वा
 धिसु खोमहासु ख आगच्छ गिवागस्या गच्छमानस्य वी दृष्टान्ति निरुदं मिर्ग यदा ला किं रुधवा वा

गोदन्व का वि वि धानि वदन् ॥ मन्वा मन्व मेरुधर्मा य वि लय दृष्टान्ति ॥ य मन्व वा धिय र कि
 का सि न्त वा वि हान स सी य सु य च त्ता नि धा दृष्टान्ति ॥ ना गध धम च कन लं ह ॥ सु व न्त ज् ॥ च त्त स ॥
 च त्त सी च त्त गुरु य कि च त्तं य नि धाय कन लं वद स क च त्तं या दृष्टान्ति ॥ ह मि ४ सो वरु नि र्हा सा रं
 दृष्टान्ति ॥ यदा व ला किं रुधवा वा धिसु खोमहासु ख ४ सुखावती लोक धामा निरुदं मिर्ग यदा ला किं रुधवा वा
 धिसु खोमहासु ख आगच्छ गिवागस्या गच्छमानस्य वी दृष्टान्ति निरुदं मिर्ग यदा ला किं रुधवा वा

भीमियाऊनसुखमाणिगमहीर्यअजयमयावेयलानवउवामुखययत्तसुत्तमागभर्कएकमेव
न्दमअयिहुँनतुकुलयगुअवकिंलोकोधनस्यवाधिसत्त्वस्यमहासत्त्वमकनयधसंज्ञानमन
हुँनतयधायिनामकुलयप्रवउमहादीयवचउथादकासैरुथाधयदकनद्वामगाणि
गमहिगर्दहाःयमवःहसिनाअधमदिममार्जनकारिःएवप्रवउमयवःअकंनसंज्ञानम
नमगमअयिहुँनतुकुलयगुअकनयःहसिनाअधमदिममार्जनकारिःएवप्रवउमयवःअकंनसंज्ञानम

मयसुखीगमअयिहुँनतयधायिनामकुलयप्रवसाननजोयमास्तधमगाइहकसम्यकंवद्धाःदि
यसोवहुंचलमयामूयात्कानएकानयित्वावकदिनध्वात्वावनायजंकुर्यात्तूरस्यभर्कमजा
कुलयप्रयत्नसुखीगमअयिहुँनतुकुलयगुअकंमयाअवलाकिरधनस्यवाधिसत्त्वस्यमहासत्त्वः
स्ययत्नसुखीगमअयिहुँनतयधायिनामकुलयप्रमकनमयामहाभीयवतस्यवकेकयफालि
गमअयिहुँनतुअवलाकिरधनस्यवाधिसत्त्वस्यमहासत्त्वस्यसकयधसम्माननयिहुँनकः

थ
क

न॥ कथथापिनाम कूलयूजचकुर्महादीयमीयन्पदान कथानिकाः सर्वे न॥ २॥ न॥ यदिरु
सकदागमिहलज्जनागमिहल॥ इत्युत्थकवाधोनिशाऊययं॥ न॥ यदिरु
किं॥ धनस्यवाधिसुखस्यमहासुखस्ययूषवग्वाला॥ यदिरु॥ अथयन्त्रयापिर्वि
हासलोहगवन्महाकदवाच॥ नमोहगवन्नीदं॥ कविस्त्यागमना॥ न॥ यदिरु
महा॥ गम्वायागववाधिसुखस्य॥ न॥ यदिरु॥

हासुखस्य॥ हगवानाख्यायक॥ कूलयूजचकुर्महादीयमीयन्पदान कथानिकाः सर्वे न॥ २॥ न॥ यदिरु
महानेधनययर्दिर्यकलीवीवर्नो॥ यद्युयाकथयतासुनमानयत्ययरेयमय निष्कावे॥ न॥ यदिरु
न॥ सम्यक्वृद्धाभवला॥ किं॥ धनस्यवाधिसुखस्यमहासुखस्यनमो॥ कविस्त्यागमना॥ न॥ यदिरु
कूलयूजचकुर्महादीयमीयन्पदान कथानिकाः सर्वे न॥ २॥ न॥ यदिरु
स्यवाधिसुखस्यमहासुखस्यनाममनस्मन॥ किं॥ धनमननयाधिइत्ययनिका॥ रुदकिं॥ आय

५५

सुखानां अर्हद्वयलक्ष्मणदशायामि॥ वाधिसुखवेन न्यानां सुखानां वाधिसुखत्रयलक्ष्मण
॥ मरुद्वयवेन न्यानां सुखानां मरुद्वयत्रयलक्ष्मणदशायामि॥ नाचाय वेन न्यानां सुखानां
वाचलक्ष्मणदशायामि॥ बुद्धवेन न्यानां सुखानां बुद्धत्रयलक्ष्मणदशायामि॥ चतुर्व
न्यानां सुखानां चतुर्वलक्ष्मणदशायामि॥ आदिदेव न्यानां सुखानां आदिदेवत्रयलक्ष्मण
दशायामि॥ चतुर्वेन न्यानां सुखानां चतुर्वलक्ष्मणदशायामि॥ अग्निवेन न्यानां सुखानां अग्नित्रय

20

[illegible]

४
३

नं धनस्य वाधिसुखस्य महासुखस्य ॥ मं धर्मयथा र्वं धृत्वा किं । मसु । खिना लोक ॥ १६ ॥ मं धनस्य
नाजसहिमुखी बकि ॥ १७ ॥ स्वाचय चैनकया धि कर्मा । धि क्वयय किं । मच धका लच द्वाय धन ॥ १८ ॥
गका उय संक्रान्ति । म्मासय किं । मा रे धी क । लय प्रहया का न ॥ १९ ॥ कर्तुं महाया न च लना ॥
२० ॥ विविध समागते ॥ २१ ॥ मना दय ॥ २२ ॥ वि सि मं ॥ २३ ॥ मं ॥ २४ ॥ मं ॥ २५ ॥ मं ॥ २६ ॥ मं ॥ २७ ॥ मं ॥ २८ ॥ मं ॥ २९ ॥ मं ॥ ३० ॥

निम्न गत । नो ॥ ३१ ॥ वस्तुवा ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

४
७

विष्णुमिहादिनाममविमरुर्वगिचिगकच। किचकयवठम्माननिवासी। अनामका
वचनीयधिदीयदग। कदाकालान्कासमयागगगस्यसुकागमहु। अहावताअउ
गठयनस्यवाधिसत्वस्यमहासुत्वस्यप्रणापद्रुकार्येनमयाहस्यां। अहमरुद्रावना
त्याताधर्मदेमय। ननिवासीमयदहमि। नगठकागहमयदहमि।
। नकु। मे। नचयमयदहमि। नगठकागहमयदहमि। नगठकागहमयदहमि।

वलाकिेकनावाधिसत्वामहासुत्वधर्मदेमय। ननिवासीमयदहमि। नगठकागहमयदहमि।
अवना४। सूचकसानिजातिना। सुखलसमन्। वाचकयगु। अवातसुत्वाअवलाकिेगठयनस्यवाधि
सुत्वस्यमहासुत्वस्ययनगठ। सुत्वाअवनावाचगु। आस्तासुयनिअन्धरुतानां सुत्वातांमागमयदह
मय। अगुतानां सुत्वातागुर्दह। अनर्धयनायर्दह॥ मातायिगहमाहव॥ पुनरुसागुनचदी
यहमाहव॥ सचनकमाकमार्गकेसुयदर्शकसुखिनासुसुवायगवसुनकयनियहनाममन

पु
३

भा. निया भा. क्ता नां य न था म हिं स काना नै. नाम न म र थ कि नां उ दि म मान मानां सं सा न
स्वा र्त्ता नां. आ सा र व लं ष्णा थं मा ना यि गृ ह को र व. च म म सा कं व त्व न व द्वा. मा ग नि द
दर्श य. आ य दि ला. कि न व न आ रु. न था यि ना. क ल य प्र य. म. सा रु. म. क
ह स यि उ या प्र स न. य. क. कि. क. या. मे. व. क. ल य. द. सा मि. न. य. थ. यि. ना. म. क. ल. य. प्र. य.
द. ह. ग. म. न. दी. वा. ल. का. म. मा. क. ल. य. प्र. य. द. सा. मि. न. य. थ. यि. ना. म. क. ल. य. प्र. य.

दियं क ल्य व मा ध म रु. क. ल. य. प्र. य. द. सा. मि. न. य. थ. यि. ना. म. क. ल. य. प्र. य.
रु. म. का. की. म. स. न. र. व. न. वि. रु. ना. मि. न. य. थ. यि. ना. म. क. ल. य. प्र. य. द. सा. मि. न. य. थ. यि. ना. म. क. ल. य. प्र. य.
मा. ध. म. रु. क. ल. य. प्र. य. द. सा. मि. न. य. थ. यि. ना. म. क. ल. य. प्र. य. द. सा. मि. न. य. थ. यि. ना. म. क. ल. य. प्र. य.
म. रु. स. म. द. स. य. म. क. म. क. म. क. वि. न्द. म. स. यि. रु. न. तु. क. ल. य. प्र. य. द. सा. मि. न. य. थ. यि. ना. म. क. ल. य. प्र. य.
न. व. ग. म. यि. रु. न. तु. क. ल. य. प्र. य. द. सा. मि. न. य. थ. यि. ना. म. क. ल. य. प्र. य. द. सा. मि. न. य. थ. यि. ना. म. क. ल. य. प्र. य.

५५

[illegible]

॥ यकाभ्यामिदं प्रियं ह्यर्थं सुखं दिव्यं ॥ उदयं मूलां चित्वा कृमांस्तु साजिगं ॥
द्विमाद्ययत्राययित्वा ॥ ततस्तत्रमहाकाशं प्रयाभ्यासुर्वहति ॥ ततश्च तत्रैव तत्रैव
त्वातासुमयांस्तु ह्यंशुत्वाका निदं प्रियं सुखं साजिगं ॥ ततश्च तत्रैव तत्रैव
या ॥ उदयं मूलां चित्वा कृमांस्तु साजिगं ॥ ततश्च तत्रैव तत्रैव

न
ज

[illegible]

पु
३

काष्ठदानमागक॥४॥दानयालेननूव॥४॥सांयवि॥४॥वासनकदा॥४॥सकथय॥४॥
 दाहसदासदागक॥४॥अथसदानयालेननूव॥४॥सांयवि॥४॥वासनकदा॥४॥सकथय॥४॥
 दुष्टीयादाजसविनागक॥४॥अथदानयालेननूव॥४॥सांयवि॥४॥वासनकदा॥४॥सकथय॥४॥
 वासनकादा॥४॥अथसदानयालेननूव॥४॥सांयवि॥४॥वासनकदा॥४॥सकथय॥४॥
 सांयवि॥४॥वासनकदा॥४॥सकथय॥४॥

॥४॥सांयवि॥४॥वासनकदा॥४॥सकथय॥४॥
 सांयवि॥४॥वासनकदा॥४॥सकथय॥४॥
 सांयवि॥४॥वासनकदा॥४॥सकथय॥४॥
 सांयवि॥४॥वासनकदा॥४॥सकथय॥४॥
 सांयवि॥४॥वासनकदा॥४॥सकथय॥४॥

पु
७

की नि॥ कं न सं ग स्य मुख सूत्र स्वगी न्यस्तु ॥ कदास कथय नि॥ आग रुम हा वा क्त न की द
हं कं अ॥ रिद्या र्यं सु वि श्र म्य मा म क द वा च न ॥ दि प्र दं या वा ॥ य दि म हा वा क्त न
य द या च सि म या ती शि य दा नि कं म या ज ने य द न्ना ॥ ने यु कि न् च ग म्य पु ॥ १ ॥
कि म वा च अ न्गु ती र्कं नि ल पा य ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
दि नो ॥ अथ स ॥ क म क द वा च न ॥ न ज म ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

आ न च स त्व या द ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
क ॥ क स च द्या दि शो क्त व य व सि ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
ल गृ क ॥ अथ व लि न सू त्र द्यो अ र्ध म मुख पु य नि क ४ म् ॥ कि उ द न्ध थ न थ मा च ॥ १ ॥
लि क ४ ॥ किं क रं म या ख न वि ष र द्द रं क रं ॥ दि व द य नि यू वि नं गृ ती य नं रं ॥ दि व
क य दं ॥ क दा स क थ य नि कृ ती यं य दं न रं वि ष क य स थ कि या चि रं की द हं उ या र्यं

क
दि

[illegible][illegible]

可
西

शिर्षं कृत्वा सुखं प्राप्य मां बद्धश्च नो मम कृत्वा लज्जां नयनं कृत्वा शिखं कृत्वा सुखं किं। यथास्थ
 दनं कृत्वा किं कदा कृत्वा सुखं विदुषी कं यथा किं। मरु कं विं कन जीयूय मां विदुषी
 यथा किं। यथा मरु कं विदुषी कं यथा किं। मरु कं विं कन जीयूय मां विदुषी
 कं यथा किं। मरु कं विं कन जीयूय मां विदुषी कं यथा किं। मरु कं विं कन जीयूय मां विदुषी
 कं यथा किं। मरु कं विं कन जीयूय मां विदुषी कं यथा किं। मरु कं विं कन जीयूय मां विदुषी

[illegible]

क
न

। नि कृता रुव किय न ला क। एक हिम हाना जय लेन यत्वं कर्तव्यं । च वस न ला मि
की धर्म दग्ना कता । अथा वला । के कश्च वा वा धिम स्त्वा महा सुत्वा व नित्य सुनन्द
मरुद वाच क ॥ गमि । अथ हिम हाना जय सिं ऊरु । महा विहाने प्रथम हारु
या गा रु वि शे । के कश्च वा वा धिम स्त्वा महा सुत्वा व नित्य सुनन्द
हा ॥ अने को निता ना व र्ध निनी ल वी र ह ॥ १२ ॥

१२

निता गत । अदि । कश्च वा वा धिम स्त्वा महा सुत्वा व नित्य सुनन्द
सा ॥ के नना महा नग म न्या ॥ सुनिय कि का ॥ १३ ॥ को निता धिम स्त्वा महा सुत्वा व नित्य सुनन्द
य कि का नि । अथ कश्च वा वा धिम स्त्वा महा सुत्वा व नित्य सुनन्द
मरु जा सं मं कत्वा द कि लं जानू म लु लं य । धि वां धु नि द्या य न रु ग वां रु ना क र नि
म्य ल म्य रु ग व न्त मरु द वा च क ॥ कश्च वा वा धिम स्त्वा महा सुत्वा व नित्य सुनन्द ॥ १४ ॥

क
५

यकूलयुगावलाकिं कं गवा वाधिसत्त्वामहासत्त्वो व लनसूत्रदस्य रुयन विह्वन नि॥
रुका सिं वस्मय आगच्छ किं ॥ अथ गगन गं जा वाधिसत्त्वामहासत्त्व रु गव रुम रुदवा
चरु ॥ कना याय नया ॥ अथ अत्र ला किं कं गं वाधिसत्त्वामहासत्त्व ॥ रु गवा नाह ॥ अथ रु
लयुग गगन ग जा वाधिसत्त्वामहासत्त्व ॥ अथ अत्र रु किं कं गवा वाधिसत्त्व
त्वामहासत्त्व ॥ अथ दा व लनसूत्रदस्य रु गव रुम रुदवा चरु ॥ अथ अत्र रु किं कं गवा वाधिसत्त्व

निवृत्त्यादि दियानि कं गवा वाधिसत्त्वामहासत्त्व ॥ अथ अत्र रु किं कं गवा वाधिसत्त्व
स्विकानि ॥ अथ अत्र रु किं कं गवा वाधिसत्त्वामहासत्त्व ॥ अथ अत्र रु किं कं गवा वाधिसत्त्व
कानि ॥ लाहिरुद अ नि सूत्रदुनूया य जा नि अने का नि अथ रु द का नि अने का नि क
युद व्याधि ॥ अने का नि यु कि नि सी म का नि यु य द नि यु अ नि य च म रु रु ना नि पाद
रु कानि ॥ अथ गगन गं जा वाधिसत्त्वामहासत्त्व रु गव रुम रुदवा चरु ॥ ना गच्छ नि

क
उ

कात्र ह सो बिहना मि ॥ तय धा पिनाम कल यूग्र मला दी य य प्र के कं गृहं दि हानं
कात्र यिक थां ॥ स्वर्ग मयं नृप च विहान मय स ह मं कृता न ॥ कथा के प्र क दि ने धा स्वाव
नाय लं कृता न ॥ यत्र क थां धा स्वाव नाय लं कृता न ॥ ३२
कुन लत्रा जं से नृप च विहान मय स ह मं कृता न ॥ कथा के प्र क दि ने धा स्वाव
यने म हान ना म कला म स ह मं कृता न ॥ कथा के प्र क दि ने धा स्वाव

सहस्रं मला स ह मं कृता न ॥ कथा के प्र क दि ने धा स्वाव
यय नि कि थां की द मं य धा स्वाव नाय लं कृता न ॥ कथा के प्र क दि ने धा स्वाव
कात्र उ वृ हं मला यान स ह मं कृता न ॥ कथा के प्र क दि ने धा स्वाव
सहस्रं मला स ह मं कृता न ॥ कथा के प्र क दि ने धा स्वाव

८५

त्वानि वा धिमा र्ग निवा ज यिक थानि (अथ कच द्रुना द्रुसाः कच कथा लं दत्वा त्रिन्ना
 यमा च व म्भिकाः । कथय न स्य न भव सा द्रुः । ग मिथ्य किय् म्भा कं । अत्र ला । किं कश्च ना वा
 धिस त्वो म हा स त्वः । धर्म सा क । भावे ज ही ना । ह विद्या म । अत्र ला किं कश्च ना वा
 धिस त्वो म हा स त्वः । धर्म सा क । भावे ज ही ना । ह विद्या म । अत्र ला किं कश्च ना वा
 धिस त्वो म हा स त्वः । धर्म सा क । भावे ज ही ना । ह विद्या म । अत्र ला किं कश्च ना वा

[illegible]

८
६

मंदयं जीवाम ॥ यन्नेव वा कस्य वृत्तिं न कर्त्तव्यम् ॥ श्री दं स न म य गृह मि का ॥ अथ
व ला कि रं ध्व ना वा धि स खो म हा स ख ॥ सि रु ल दी या द व ती र्य वा न सी म हा न ग यो
उच्चा न य मा व स्था नं न हा न का नि क मि क ल स र मा धि य मि व र्त्ति कि ॥ ८ ॥ य व ला कि रं
ध्व ना वा धि स खो म हा स ख ॥ व र्त्ति म हा न य म व र्त्ति म हा न य म व र्त्ति म हा न य म
द यो ग र्त्ति मि ध्व ना वा धि स खो म हा स ख ॥ ९ ॥ य व ला कि रं ध्व ना वा धि स खो म हा स ख ॥

२१

क विं ॥ मि र व र्त्ति म हा न य म व र्त्ति म हा न य म व र्त्ति म हा न य म व र्त्ति म हा न य म
ध्व ना वा धि स खो म हा स ख ॥ व र्त्ति म हा न य म व र्त्ति म हा न य म व र्त्ति म हा न य म
न वा ना धि स खो म हा स ख ॥ य का र्त्ति ॥ कदा म ग व र्त्ति म हा न य म व र्त्ति म हा न य म
मे न य का र्त्ति ॥ य का र्त्ति ॥ कदा म ग व र्त्ति म हा न य म व र्त्ति म हा न य म
नि का र्त्ति म हा न य म व र्त्ति म हा न य म व र्त्ति म हा न य म व र्त्ति म हा न य म

८
७३

हं कस्य निमिषं अत्र लाकि कं ध्वनस्य वाधिसुखस्य महासुखस्य । अथ सयन्त्रा ३० अं राधि
कुमानव ४॥ अत्र हं नानादीय रक्त ४ । सूर्य काय दग्धानां कृष्ण रक्त ४ । गृध्राय कृता नानां दीय रक्त
४ । रुयही नाना मृत्तय न्यद ४ । आधिपति यी कितानां वै य रक्त ४ । द ४ । खितानां सिखानां मा नायि
कृत् रक्त ४ । अथी चोपय नानां सिद्धो वन उदः क ४ । ७३ । निरुक्ति कस्य मृत्तयि ४ । वाधि
सुखिका सुला कय कस्य नाम मन्त्र न निरुक्ति । कस्य । ७३ । सांस्त निरुक्ति ४ । खंय निरुक्ति ४ ।

२४

सत्र कना सुयन्त्रा ४॥ अत्र लाकि कं ध्वनस्य वाधिसुखस्य महासुखस्य । अथ सयन्त्रा ३० अं राधि
लाकि कं ध्वनस्य वाधिसुखस्य महासुखस्य । अथ सयन्त्रा ३० अं राधि
जाय निरुक्ति कवर्तिन ४ । सफन त समन्ता गता ४ । कथ थम कन तं रुक्ति न तं अ ४ । ध्वन तं मः
धिन तं । मीन तं । गुरुय किन तं । य नि धमय कन तं । एव सफ मं । एहि ४ । सफन तं ४ । समन्ता
गता रुव नि । अत्रा व लाकि कं ध्वनस्य वाधिसुखस्य महासुखस्य । अथ सयन्त्रा ३० अं राधि

卷

ॐ नानामसमाधिः ॥ स्वाका न क नानामसमाधिः ॥ असूत्रसंज्ञाद नानामसमाधिः ॥ रुद्र नाना
मसमाधिः ॥ निर्वाणसंज्ञाद नानामसमाधिः ॥ महाद्वीपा नानामसमाधिः ॥ दिय नानामसमा
धिः ॥ रुद्रा न क नानामसमाधिः ॥ अक्षय क नानामसमाधिः ॥ दवा रित नानामसमाधिः ॥
दवा विमूक नानामसमाधिः ॥ यम क नानामसमाधिः ॥ यम र्थसंदर्भ नानामसमाधिः ॥
वि क नानामसमाधिः ॥ नाग क नानामसमाधिः ॥ मिह वि प्र वि नानामसमाधिः ॥ स्वा वि म

[illegible]

वृ
त्रि

स्नायवसद्विद्यरु॥यागववाधिसत्त्वानांरुक्पूर्वकुलपुत्रपुत्रम्याधिसत्त्वहृदयत।कदाहंसिह
लक्ष्मीययाज्ञांसयस्त्रिक॥यचोहिर्वदि॥॥साध्वंसकठेरात्रेमूठो॥पिठके॥उ॥॥गमगदरादि
रि॥यहृकंयधमायासिंहलक्ष्मीयंसयस्त्रिक॥यमनगवतिगमजनयदयलनेयव
मान॥सिंहलक्ष्मीयमन्याफ॥नियुक्तयायान॥कमिगदेकं॥कदासक॥
का॥पुत्रसन्तानमवधी॥यवजाय॥यव॥नल॥गवा॥

यवजाय॥अथवावाकस॥वीययवाकवाका॥यवजायवमाक॥यवत्वलदेवाकनी
मानसिंहलक्ष्मीययवाकवाका॥अथस्यानयाप्रमकएवसिंहलक्ष्मीयस्येयस्त्रिक॥क
॥सिंहलक्ष्मीयनिवासिनीरीवाकसी॥रि॥अकालवायवत्त॥॥सएवस्यानयाप्रमकुव
उंविमीर्षंरवदिकयव्याउदकयकितावाकवलनसंकुमानवा॥ककसीनस्यसः
मीयमन्याफा॥ककावाकसीतायच॥॥कानिनि॥कानिनि॥कानिनि॥कानिनि॥कानिनि॥कानिनि॥

五

[illegible][illegible]

२
५

नामि। अथ सत्र किं कथं स्रुम कथं वाचकम्। अस्मिन् दवावा लाहना नामा ध्वना जा। सच हीन दीः
नान् कथं कथं सत्र वा लाहना ध्वना जा। सर्वे स्वेना नमः सोमं वा उ लाव स्रुव कं वा लका
स्रु ल स्रुव रु नय वि दृष्टं न वा तं। अथ उ नमः कथं नमः वा ध्वनीय यु कथं कथं। अथ
कथं वि नमः यु यथा ह नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः
कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः

कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः
कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः
कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः
कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः
कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः कथं कथं कथं नमः

व
३

[illegible][illegible]

बु
वि

[illegible][illegible]

ब्रह्म

[illegible][illegible]

क
७

हं कदाचिदयं गच्छामि यथा श्रद्धा उच्यते ॥ अथ रुग्णवानसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा
अथ रुग्णवानसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥ अथ रुग्णवानसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥
विविधादवकीर्यते ननु कथं लाजासाधिविद्वजः ॥ कदाचिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥
ननु किं साधसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥ अथ रुग्णवानसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥
ननु किं साधसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥ अथ रुग्णवानसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥

अथ रुग्णवानसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥ अथ रुग्णवानसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥
ननु किं साधसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥ अथ रुग्णवानसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥
किं रुग्णवानसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥ अथ रुग्णवानसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥
अथ रुग्णवानसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥ अथ रुग्णवानसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥
वृद्धासाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥ अथ रुग्णवानसाधकाश्चिदंशोऽपि साधसाधकस्तथा ॥

काअसंस्थ ४१। एवमव कलयन्नाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ४२। कसूनाम विववयस
 नरुदा वाधिसत्त्वामहासत्त्व ४३। कसांवासा विववाश्रयाकाअसंस्थ ४४। एवमव कस
 नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ४५। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ४६।
 ताधिसत्त्वामहासत्त्व ४७। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ४८। एवमव कस
 नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ४९। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ५०।

यासिना ५१। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ५२। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ५३।
 कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ५४। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ५५। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ५६।
 मिह ५७। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ५८। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ५९। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ६०।
 सर्वधर्मेषु। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ६१। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ६२। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ६३।
 स्यस्वराव कायं कथमगक एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ६४। एवमव कस नानिनाम विववाश्रयाकाअसंस्थ ६५।

सत्या ४॥ अविस्मयं कलपयन्मृतलोके कथं वा वाधिसत्त्वा महासत्त्वध्या किं वा या निरुद्धं
न अकिं अतः कानि सत्त्व काठी निरुद्धं कथं सत्त्वध्या विप्रं विप्रं विप्रं किं सत्त्वाध्या विप्रं विप्रं
२॥ अविस्मयं कलपयन्मृतलोके कथं वा वाधिसत्त्वा महासत्त्वध्या किं वा या निरुद्धं
जाह्नममनष्टत्वा किं सत्त्वध्या विप्रं विप्रं विप्रं किं सत्त्वाध्या विप्रं विप्रं
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अविस्मयं कलपयन्मृतलोके कथं वा वाधिसत्त्वा महासत्त्वध्या किं वा या निरुद्धं

यत्तदन्ताय ॥ अविस्मयं कलपयन्मृतलोके कथं वा वाधिसत्त्वा महासत्त्वध्या किं वा या निरुद्धं
हंरुगवन्नवला किं कथं वा वाधिसत्त्वा महासत्त्वध्या किं वा या निरुद्धं
सत्त्वध्या विप्रं विप्रं विप्रं किं सत्त्वाध्या विप्रं विप्रं विप्रं किं सत्त्वाध्या विप्रं विप्रं
४॥ अविस्मयं कलपयन्मृतलोके कथं वा वाधिसत्त्वा महासत्त्वध्या किं वा या निरुद्धं
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अविस्मयं कलपयन्मृतलोके कथं वा वाधिसत्त्वा महासत्त्वध्या किं वा या निरुद्धं

दिननञ्चरुकरनकसमाग्निमस्यस्थिरनम्रथसर्वनिबन्धनविष्कम्भीगवकमकदवात्रक्
कमकालरुगवन्तवलाकिरुध्वजावाधिसत्त्वामहामत्वाकृति॥ रुगवन्तवलाहसमिध
वहसमिधकालास्तु कलपयञ्चवलाकिरुध्वजस्य वाधिरुध्वजमहामत्वाहसमिध
यामकालसमयं कथयति तामकलपयञ्चकलायामविद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दताम
विद्वद्वायामविद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दतामविद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दताम

सिद्धिं वाचिन्तितो ज्ञातुं विद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दतामविद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दताम
सिद्धिं वाचिन्तितो ज्ञातुं विद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दतामविद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दताम
कविन्दतामविद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दतामविद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दताम
महीरुस्मिन्महाविन्दोयामविद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दतामविद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दताम
विद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दतामविद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दतामविद्वद्वाद्यकीर्यस्थिरकविन्दताम

धनत्रयकवर्णिमारेषकं लहक। यस्य कस्य त्रिदशमसप्तम्यमंददाकिमेणा
 वाहयलवासर्वकजुर्ववर्णि का वाधिसत्त्वोहव। क॥ क्षयकभनरुनासम्यक्का विमारे
 सम्वत्तक। यः कश्चिद्वक्तुस्य भन्तायि स्य भाकि। सर्वत्रयमसह। का वाधिसत्त्वोहव
 भन्तामकलकीयन्वदज कदा त्रिदशमसप्तम्यमंददाकिमेणा
 यियः कसर्वकजुर्ववर्णि का वाधिसत्त्वोहव यः कश्चिद्वक्तुस्य भन्तायि स्य भाकि। सर्वत्रयमसह। का वाधिसत्त्वोहव

[illegible]

वावेति... नीच... अति... देवी...
सहस्र... सिद्ध...
महा... नदी...
कवी...
हानदी...

२२

दृष्टा...
ना...
नदी...
कवी...
हानदी...

सि ॥ १ ॥ ... अगलवधवसुधासिंह ... अथकन दसगम ... अथकन ...
आदि ॥ ४ ॥ मृदीकमा ... कादि ॥ ४ ॥ ... मया ... अथकन ...
... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ...
... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ...
... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ...

२२

अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ...
... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ...
... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ...
... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ...
... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ... अथकन ...

कलपयुगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्य
नायिहुंकरथायितामकलपयुगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्य
ननुवदुद्वयोमहाविद्यायव्यस्यकलपयुगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्य
युगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्यकलपयुगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्य
वाधिसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्यकलपयुगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्य

२५

स्ययव्यस्यकलपयुगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्य
ननुवदुद्वयोमहाविद्यायव्यस्यकलपयुगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्य
मयाकलपयुगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्यकलपयुगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्य
मयाकलपयुगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्यकलपयुगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्य
कलपयुगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्यकलपयुगलकसंज्ञाधुतद्वयोमहाविद्यायव्यस्य

मस्याहमिह किमुत न सतामह न प्रकं॥३॥ पुनरपि वनतावेकमहीरुः ॥४॥
 तस्यैव न सतामह न प्रकं॥५॥ कनीमहा विद्या प्रकसाप्रदायुक्ति १००
 लक्ष्मिपुत्रवत्कसुमरः ॥६॥ पुनरपि वनतावेकमहीरुः ॥७॥
 अस्मास्यनधनवन्ति ॥८॥ आह नृपुत्रः ॥९॥ कनीमहा विद्याप्रतिस्वाययनूक्ति

ननु नाभी किंचिदस्मिन् नमस्तुत्या। तिलिङ्गपि कान्तिरुत्ति। यत्र मान्त्रजायमा कथम
 स नरक ४४ म्या क नृत्वा। देवसु त्रुमया कानयक। कानयि त्वा जक। दिने धा त्वा त्रु
 यत्त कथयति। यत्र कथां हल वि। वाकं कथ कथं मन्त्रा विद्याया जका कन दैत्य रुत विद्या
 मन्त्रे लोया मन्त्रां सुय कि। विरुमा क्ता धां। य ४ कुल पत्ता वा कुल दहि मा वा न्मां व
 कनीं ३ हा। विद्या कथयत्त न्मां सुय विद्य विरु कन वा कथयत्त मन्त्रे लोया

ममैकमनी... श्वसनासिद्ध...
...मिहान... कस्यद... नाय...
...साध... सुद... माय... १०२
...विद्या...
...विद्या...
...विद्या...

...समुल्ल...
...सम...
...विद्या...
...विद्या...
...विद्या...

यहीनस्य वाधि वीर्जमदवाधमसतव
हिं। अहं दानां कृष्णानां य। नारदं किं स नरकं य। वा कं सव मायय उवय
दृष्टो। क कमीमहा वि चाना होय नाहरा नूरुनां सन्यक्तं वापि स। किं स दृष्ट
यं। चाद दक्ष कान न सन्यक्तं यव रुय यं। स वसि त्वा ना शां मादि का दृष्ट्या च विमाध
यं। मधु सूर्यान्व मा धि व भयं कृष्ण नीमहा विद्या ना ही लक्ष्मि। अहं दानां कृष्णानां य

साग नाय थ। ला ज रुका शिवा वसन शरु क मउ कं च। अहं प्रा कि रु व स का दृष्ट्या च विमाध
नानां द दानां सन्यक्तं कृष्णानां य। क म नाना महा न ग म म नू थ। स व स नित्य कि कं क
वसि त्वा ना शां मादि का दृष्ट्या च विमाध यं। स वसि त्वा ना शां मादि का दृष्ट्या च विमाध
नथ रं व व न न न कृष्णानां य। क म नाना महा न ग म म नू थ। स व स नित्य कि कं क
नानां द दानां सन्यक्तं कृष्णानां य। क म नाना महा न ग म म नू थ। स व स नित्य कि कं क

विष्णुविष्णुसमाधिस्तथात्रिपदं...
कांकिण्यदं यत्र कुलपुत्र...
कथं विष्णु...
देवमृगम...
नेतविष्णु...

पहिले...
नक्षत्रमहा...
मृगमृग...
सर्वविष्णु...
यत्र कुल...

नाश्रुहन्ति ४५ मय संवत् १५०० गव वादि १५०० मय संवत् १५०० जय एक छल सांमहा
या नस्य किं विदया वह १५०० या नस्य संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५००
वृहत् काला नवो य १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५००
मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५००
मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५००

मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५००
मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५००
मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५००
मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५००
मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५०० मय संवत् १५००

[illegible][illegible]

७
 ८
 अस्य यमा दम रु द्दी हुं । न तु कुल य प्र म क म म या व रु रु नी म हा वि धा म क जा य स्य य
 स्तु न्व रु द्दी हुं । म क म या कु ल य प्र द्वा ल का म म द स्य उ क उ क द्वा ल का गं द्वा ये हुं । न
 तु म क म या कु ल य प्र म रु नी म हा वि धा म क जा य स्य य स्तु न्व रु द्दी हुं । रु स थ म पि
 नाम कु ल य प्र क षि द व य न्वा र व र । स गृ हं य नि य र्थ र्था जन स म रु सं क र्था कि । उ द्दी न य
 व था जन म का नि स कि ल रु ल व नि य र्थ र्था । न रु द्दी हुं । रु स थ म पि न्व रु द्दी हुं ।

नि । रु द्दी हुं । वि द न्व रु द्दी हुं । रु स थ म पि न्व रु द्दी हुं । रु स थ म पि न्व रु द्दी हुं ।
 म रु स रु द्दी हुं । वि द न्व रु द्दी हुं । रु स थ म पि न्व रु द्दी हुं । रु स थ म पि न्व रु द्दी हुं ।
 ना नि । घ ष्म सा ला य ल म्बि । नि । रु द्दी हुं । रु स थ म पि न्व रु द्दी हुं । रु स थ म पि न्व रु द्दी हुं ।
 रु द्दी हुं । रु स थ म पि न्व रु द्दी हुं । रु स थ म पि न्व रु द्दी हुं । रु स थ म पि न्व रु द्दी हुं ।
 म रु स रु द्दी हुं । वि द न्व रु द्दी हुं । रु स थ म पि न्व रु द्दी हुं । रु स थ म पि न्व रु द्दी हुं ।

अ
७
३

सिक्तानिर्दोषानिर्दिष्टाकि। दानयान् सिक्तानिर्दोषानिर्दिष्टाकि। भीलयात्र सिक्तानिर्दोषानि
दिष्टाकि। दानयान् सिक्तानिर्दोषानिर्दिष्टाकि। वीर्ययान् सिक्तानिर्दोषानिर्दिष्टाकि। धमः
नयान् सिक्तानिर्दोषानिर्दिष्टाकि। यस्यायान् सिक्तानिर्दोषानिर्दिष्टाकि। नवकेवि। विद्वत्तम् १
दोषानां। जाम्बूदीयका नांमनूया। भांका। नकासु चर्म देहायकि। नवकेकुलपुपाव
लाकि। कश्चन स्यादधिस्तलस्य सप्तस्तलस्य भासु विद्वत्तम्। विद्वत्तम्। विद्वत्तम्।

पक्षानिर्दोषानिर्दिष्टाकि। दानयान् सिक्तानिर्दोषानिर्दिष्टाकि। भीलयात्र सिक्तानिर्दोषानि
दिष्टाकि। दानयान् सिक्तानिर्दोषानिर्दिष्टाकि। वीर्ययान् सिक्तानिर्दोषानिर्दिष्टाकि। धमः
नयान् सिक्तानिर्दोषानिर्दिष्टाकि। यस्यायान् सिक्तानिर्दोषानिर्दिष्टाकि। नवकेवि। विद्वत्तम् १
दोषानां। जाम्बूदीयका नांमनूया। भांका। नकासु चर्म देहायकि। नवकेकुलपुपाव
लाकि। कश्चन स्यादधिस्तलस्य सप्तस्तलस्य भासु विद्वत्तम्। विद्वत्तम्। विद्वत्तम्।

[illegible]

नवतविहानमगमनीय
कधमोयाकनसमृद्धताय
श्रुतवलाकि कननेपवी
द्वितीयगह
श्रुतवलाकि कननेपवी
द्वितीयगह
श्रुतवलाकि कननेपवी
द्वितीयगह

अ
थ
दि

मरुदवाचकः। रुविष्यसि त्वं रुगिति हि मरुदः स्यादिति। अथा। रुविष्यत्वात् कथं
रुविष्यति। उमः स्वना नाम मरुदः अगता हन्ता मरुदः कथं वा विद्याय न अमरुदः स्यात्।
ला कविद नूरुनः यूनः प्रदम्यः अमनाधिः ४४। स्यादवा ता न मरुदः अमरुदः कथं वा ता
थसा उमादवीया कन अमनयायाः रुसावा ता कथं यत्नः सवती वनः अवि क महीया रु
यला के रु विष्यत्वात् विष्यत्वेन मरुदः स्यात्। रुविष्यत्वात् कथं वा ता

मरुदवाचकः। मरुदः अगता हन्ता मरुदः कथं वा विद्याय न अमरुदः स्यात्।
गवत्कम मरुदवाचकः। अगता हन्ता मरुदः कथं वा विद्याय न अमरुदः स्यात्।
अमरुदः कथं वा विद्याय न अमरुदः स्यात्।
हाम् त्वोः नूया कः अथ मरुदः लं जर्म अथ मरुदः मता नर्थः। अथ मरुदः आशा यनि यून
यथं अथ मरुदः यनि यनि अथ मरुदः लं वा चि माग्ने रुविष्यत्वात् कथं वा ता

समहासत्त्वस्य षष्ठ्यर्थं गन्धायिर्हं कथं ध्यायिनाम कलपूषणं कुरुमया यन्मा
नत्र जस्य प्रसाधमद्विहीर्हं न उच्यते लाकिरेष्वनस्य वाधिसत्त्वस्य महासत्त्वपूषणं
थ गन्धायिर्हं कथं ध्यायिनाम कलपूषणं कुरुमया महासमद्वेष्टकम कविर्द्विग
यिर्हं कथं जस्य प्रसाधमद्विहीर्हं न उच्यते लाकिरेष्वनस्य वाधिसत्त्वस्य महासत्त्वपूषणं
मं कथं ध्यायिनाम कलपूषणं कुरुमया महासमद्वेष्टकम कविर्द्विग

न उच्यते लाकिरेष्वनस्य वाधिसत्त्वस्य महासत्त्वपूषणं
गन्धायिर्हं कथं ध्यायिनाम कलपूषणं कुरुमया महासमद्वेष्टकम कविर्द्विग
कामहासमद्वेष्टकम कविर्द्विग
दोत्रि काशे सर्वलख कारुण्यं कथं नृपतेनाम कथं नृपतेनाम कथं नृपतेनाम
कथं नृपतेनाम कथं नृपतेनाम कथं नृपतेनाम कथं नृपतेनाम कथं नृपतेनाम

अ
थ
ह

हासस्वः अथ कथं पृथ्वं स म्हा नं रा अयि र्मुं ॥ कथं अथिना मसुर्वे नि त व ॥ रिक्क म्ही दा व ॥
गमन दी वाल को य सा क्क अग गा र्द क ॥ स म्म क्क व्हा म्ही व न पि उ या व म्म ना म नः
म्ल न प स्य य र्हे य अ य नि क्क ने ॥ स वी य क न ॥ अ व्हे क्क म्हा क्क अग गा उ य रि क्क म्हा र्द य ॥
अ क्क म्हा क्क अग गा नां उ य र्हा न य अ क्क न्त्वं ॥ क्क ॥ क्क ल य्वा व ला नि क्क ॥ अ न म्म वा वि
म्य म्हा स ल स्य उ क्क म्हा ला य्वा क्क न्त्वं ॥ कथं अथिना मसुर्वे नि त व ॥ रिक्क म्ही दा व ॥

अथ कथं पृथ्वं स म्हा नं रा अयि र्मुं ॥ कथं अथिना मसुर्वे नि त व ॥ रिक्क म्ही दा व ॥
गमन दी वाल को य सा क्क अग गा र्द क ॥ स म्म क्क व्हा म्ही व न पि उ या व म्म ना म नः
म्ल न प स्य य र्हे य अ य नि क्क ने ॥ स वी य क न ॥ अ व्हे क्क म्हा क्क अग गा उ य रि क्क म्हा र्द य ॥
अ क्क म्हा क्क अग गा नां उ य र्हा न य अ क्क न्त्वं ॥ क्क ॥ क्क ल य्वा व ला नि क्क ॥ अ न म्म वा वि
म्य म्हा स ल स्य उ क्क म्हा ला य्वा क्क न्त्वं ॥ कथं अथिना मसुर्वे नि त व ॥ रिक्क म्ही दा व ॥

...यमया ... नि...
...वयं यन...
...वादा...
...न्या क्रम...
...महास...
...वाधिस...

यमयनाय...
दा...
पुत्र...
वाधिस...

